

राष्ट्रीय निर्माण में युवाओं के लिए व्यावहारिक शिक्षा एवं सोशल मीडिया नैरेटिव की भूमिका : एक आलोचनात्मक विश्लेषण

The Role of Practical Education and Social Media Narrative for Youth in National Construction: A Critical Analysis

¹प्रो. (डॉ.) पवन सिंह मलिक एवं ²सौरभ शुक्ला

¹Prof. (Dr.) Pawan Singh Malik and ²Sourabh Shukla

¹Chairperson, Department of Communication and Media Technology,
J.C. Bose University of Science and Technology, YMCA Faridabad

²Department of Communication and Media Technology, J.C. Bose University of Science and
Technology, YMCA Faridabad

¹pawanmalik@jcboseust.ac.in, ²shuklasourabh1409@gmail.com

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21817616>

सारांश

यह शोध पत्र राष्ट्रीय निर्माण में युवाओं के लिए व्यावहारिक शिक्षा एवं सोशल मीडिया नैरेटिव के प्रभावों का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह जाँच करता है कि किस प्रकार से सोशल मीडिया के नैरेटिव को व्यावहारिक शिक्षा के साथ युवाओं को सिखाकर लोगों में राष्ट्रीय निर्माण और राष्ट्रीय पहचान की भावना को जागृत किया जा सकता है। यह शोध पत्र सोशल मीडिया पर फैले राष्ट्रीय विरोधी एवं राष्ट्रीय निर्माण सहायक नैरेटिव दोनों की जाँच करते हुए आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह भविष्य की हमारी प्रेरणा विकसित भारत 2047 के निर्माण के लिए व्यावहारिक शिक्षा में बदलावों की जरूरत के प्रति ध्यान आकर्षित करता है। इसके निष्कर्षों से सोशल मीडिया के पेशेवर लोगों को, शिक्षकों को, नीति निर्माताओं को, एवं विकसित भारत की नींव हमारे देश के युवाओं को बहुत लाभ होगा, जिससे वे व्यावहारिक शिक्षा में राष्ट्रीय निर्माण के विषय को सम्मिलित कर भविष्य की प्रभावी रणनीतियां विकसित कर सकेंगे।

Abstract

This paper critically examines the impact of social media narratives and practical education on nation building. It examines how social media narratives, combined with practical education can foster a sense of national identity among the youth. This paper focuses on examining both the Pro-national narratives and Anti-national narratives circulating on the digital media platforms specially the social media. This paper draws the attention towards the need for changes in practical education to build our future vision i.e. Viksit Bharat 2047. The findings of this paper will greatly benefit social media professionals, educators, policymakers, and the youth. This paper will enable them to develop effective strategies for the future by incorporating the theme of nation-building into practical education.

मुख्यशब्द: नैरेटिव, सोशल मीडिया, व्यावहारिक शिक्षा, राष्ट्रीय निर्माण, युवा और विकसित भारत 2047।

Key words: Narrative, Social Media, Practical Education, National Building, Youth and Developed India 2047.

प्रस्तावना

राष्ट्रीय निर्माण एक बहुत ही जटिल एवं बहुस्तरीय प्रक्रिया है जिसमें समाज के सभी हिस्सों की भागीदारी एवं योगदान को सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

युवाओं की भूमिका इस पूरी प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यही भविष्य के विकसित भारत के निर्माण के लिए रखी जाने वाली आज की नींव हैं। व्यावहारिक शिक्षा और सोशल मीडिया नैरेटिव इस पूरी प्रक्रिया के दो मजबूत स्तम्भ हैं जो युवाओं को प्रेरणा देने के साथ-साथ सशक्त कर सकते हैं राष्ट्रीय निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए।

व्यावहारिक शिक्षा छात्रों को तैयार करती है, वास्तविक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए। यह न केवल उनको सैद्धांतिक ज्ञान देती है बल्कि उनको वह व्यावहारिक कौशल भी प्रदान करती है जिससे वे अपने निजी एवं पेशेवर जीवन में उपयोग कर सकते हैं। व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से युवा राष्ट्र के निर्माण में भाग ले सकते हैं एवं समाज में एक नया सकारात्मक बदलाव भी ला सकते हैं।

सोशल मीडिया एक बहुत ही महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली माध्यम के रूप पिछले दशक में उभर कर सामने आया है, जो सिर्फ लोगों को जोड़ने का काम ही नहीं बल्कि बहुत सारे सामाजिक विषयों पर जागरूकता फैलाने का भी काम करता है। सोशल मीडिया समाज में युवाओं के विचारों और धारणाओं को आकार देने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह सोशल मीडिया नैरेटिव समाज में प्रेरणा एवं ज्ञान प्रदान करने का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं परन्तु इनसे गलत जानकारी एवं नकारात्मकता और भी ज्यादा तेजी से फैलाई जा सकती है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य व्यावहारिक शिक्षा और सोशल मीडिया कथनों के प्रभाव का महत्वपूर्ण विश्लेषण करना है, विशेष रूप से राष्ट्रीय निर्माण के सन्दर्भ में। यह शोध पत्र जांचता है कि कैसे सोशल मीडिया नैरेटिव को व्यावहारिक शिक्षा के साथ एकीकृत करके राष्ट्रीय पहचान एवं राष्ट्रीय निर्माण की भावनाओं को युवाओं के अंदर जागृत किया जा सकता है। अतिरिक्त

रूप से यह शोध पत्र व्यावहारिक शिक्षा एवं राष्ट्रीय निर्माण में चिन्हित करेगा उन महत्वपूर्ण बदलावों को जो विकसित भारत 2047 के लिए अतिआवश्यक हैं।

इस शोध पत्र के परिणाम नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं सोशल मीडिया के पेशेवर लोगों को बहुत ही सहायक सिद्ध होंगे। यह परिणाम आगे चलकर राष्ट्रीय निर्माण, व्यावहारिक शिक्षा एवं सशक्त युवाओं की विकसित भारत 2047 में भूमिका सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी रणनीतियां बनाने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे।

यह शोध पत्र युवाओं की राष्ट्रीय निर्माण में भूमिका को समझने एवं उन्हें व्यावहारिक शिक्षा व सोशल मीडिया नैरेटिव की जानकारी देकर और सशक्त करने के ऊपर जोर देता है। इस शोध का उद्देश्य इस पूरी प्रक्रिया में योगदान देते हुए राष्ट्रीय निर्माण में युवाओं की भूमिका को और प्रभावी बनाना है जिससे विकसित भारत 2047 का स्वप्न सच हो सके।

साहित्य समीक्षा

सुयित्तो एवं अन्य [2] के अनुसार क्षेत्र में सोशल मीडिया का इस्तेमाल बहुत ही तेजी से बढ़ा है, विशेष रूप से कोविड -19 महामारी के वक्त। यह शोध दर्शाता है कि सोशल मीडिया माध्यम जैसे कि फेसबुक और व्हाट्सपप बहुत ही प्रभावी औजार के रूप में शिक्षा, ऑनलाइन संचार एवं संसाधनों के साझा उपयोग में काम आ रहे हैं। शिक्षक एवं छात्र मीडिया का इस्तेमाल शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिये कर सकते हैं। यह शोध पत्र टेक्नोलॉजी एक्सेप्टेन्स मॉडल (TAM) की बात करता है। छात्रों के व्यावहारिक इरादे की बात करता है सोशल मीडिया को इस्तेमाल करने में। सोशल मीडिया छात्र जुड़ाव, बातचीत, और सीखने के परिणामों को बढ़ा सकता है, लेकिन इसका प्रभावी उपयोग सावधानीपूर्वक डिजाइन और शैक्षणिक कार्यक्रमों में एकीकरण की आवश्यकता है।

पुरनामा एवं अन्य [3] के अनुसार आज के समय में छात्रों की धारणाओं और सामाजिक संवाद को एक ढांचा देने में सोशल मीडिया की भूमिका सराहनीय रही है। फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म ने छात्रों के संवाद, और अपने और दूसरों के प्रति उनकी धारणा को बदल दिया है, जिसके गहरे मनोवैज्ञानिक प्रभाव हैं। जबकि सोशल मीडिया सामूहिक अध्ययन और ज्ञान साझा करने के अवसर भी प्रदान करता है, अत्यधिक या गैर-जिम्मेदारी से उपयोग एकाग्रता, उत्पादकता और मानसिक स्वास्थ्य को खराब कर सकता है। सोशल मीडिया के फायदों का लाभ उठाने के लिए, इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करते हुए, शैक्षिक संस्थानों को अपने पाठ्यक्रमों में सोशल मीडिया साक्षरता शिक्षा को शामिल करना आवश्यक है। माता-पिता को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग को लेकर सचेत रहना चाहिए ताकि एक सुरक्षित और सहायक सीखने का माहौल बनाया जा सके।

पेरेज़ एवं अन्य [4] के अनुसार यह शोध उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया की भूमिका की जांच करता है, विशेष रूप से इसे एक शिक्षण उपकरण के रूप में उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित करता है। 2009 और 2021 के बीच प्रकाशित 772 लेखों की एक प्रणालीबद्ध समीक्षा के माध्यम से, शोध और शिक्षा के लिए सोशल मीडिया की क्षमता में बढ़ती रुचि को उजागर करता है, जिसमें फेसबुक और ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्मों का बहुत अध्ययन किया गया है। हालाँकि, विश्लेषण यह दर्शाता है कि सिद्धांत से जमीनी स्तर के शोध में एक बड़ा अंतर है, जिसमें से केवल 7 प्रतिशत अध्ययन एक सैद्धांतिक ढाँचे का उपयोग कर रहे हैं। टेक्नोलॉजी एक्सेप्टेंस मॉडल (TAM) सबसे सामान्य रूप से उपयोग किया जाने वाला एक ढाँचा है, जो मुख्य रूप से सोशल मीडिया के प्रति दृष्टिकोण की जांच करता है। अध्ययन यह सुझाव देता है कि भविष्य के अनुसंधान को शिक्षण सिद्धांतों को एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि शिक्षा में सोशल मीडिया के सर्वोत्तम संभावनाओं का पता लगाया जा सके।

घानी एवं अन्य [5] के अनुसार यह शोध 2018–2022 के बीच 30 लेखों का विश्लेषण करते हुए, शैक्षिक उपकरण के रूप में सोशल मीडिया के लाभों और हानियों की जांच करता है। इसके निष्कर्षों में शिक्षा में सोशल मीडिया के लाभों को उजागर किया

गया है, जिसमें इंटरैक्शन और संचार कौशल में सुधार, छात्र प्रेरणा और सामाजिक-भावनात्मक कल्याण को प्रोत्साहित करना, और सार्वजनिक पहुंच को सक्षम करना शामिल है। हालाँकि, समीक्षा में कुछ चुनौतियों की पहचान भी की गई है, जैसे कि लत, विक्षेपण, गोपनीयता का हनन, साइबरबुलिंग, और सीमित इंटरनेट पहुंच। लाभ को अधिकतम करने के लिए, शिक्षकों को सोशल मीडिया के उपयोग के लिए दिशा-निर्देश निर्धारित करने चाहिए, और संस्थाएं अपने खुद के ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म विकसित कर सकती हैं।

ज्ञान अंतराल

1. सोशल मीडिया नैरेटिव की राष्ट्रीय निर्माण में भूमिका के बारे में अधिक जानकारी न होना। जैसे :

किस तरह के सोशल मीडिया नैरेटिव सबसे ज्यादा प्रभावी है राष्ट्रीय निर्माण की भवनाओं को युवाओं के अंदर जागृत करने के लिए?

युवा इन सभी सोशल मीडिया नैरेटिव के बारे में क्या राय एवं प्रतिक्रिया रखता है।

2. व्यावहारिक शिक्षा एवं सोशल मीडिया के एकीकरण के बारे में शोध की उचित अनुपस्थिति।
 - व्यावहारिक शिक्षा में ऐसे क्या बदलाव किये जाये की इसे सोशल मीडिया नैरेटिव के साथ जोड़कर राष्ट्र निर्माण में उपयोग किया जाए।
 - सोशल मीडिया नैरेटिव को व्यावहारिक शिक्षा के साथ जोड़कर राष्ट्रीय निर्माण को बढ़ावा देने की क्या चुनौतियां और क्या फायदे हो सकते हैं।

3. सोशल मीडिया का युवाओं की राष्ट्रीय पहचान के ऊपर प्रभाव।

सोशल मीडिया किस तरह से युवाओं की राष्ट्रीय पहचान के प्रति धारणाओं को बनता या बिगाड़ता है।

सोशल मीडिया युवाओं की राष्ट्रीय निर्माण के प्रति मानसिकता को कैसे प्रभावित कर सकता है।

किस तरह से समाज में सकारात्मक राष्ट्रीय निर्माण और पहचान की भावना को बढ़ाने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया जा सकता है।

डेटा विश्लेषण:

प्रथम भाग प्रश्नावली

1. नाम
2. आयु: वर्ष
3. शिक्षा स्तर
4. लिंग
5. निवास स्थान

आयु:

- अधिकांश उत्तरदाता (करीब 70%) 17–20 वर्ष के बीच हैं।
- 21 वर्ष और उससे अधिक आयु के उत्तरदाताओं का एक छोटा प्रतिनिधित्व है।
- औसत आयु लगभग 18–19 वर्ष है।

शिक्षा स्तर:

- अधिकांश उत्तरदाता स्नातक (करीब 80%) हैं।
- कुछ स्नातकोत्तर छात्र (करीब 10%) हैं।
- कुछ उत्तरदाता अनुसंधान छात्र हैं।

संस्थान/विश्वविद्यालय:

- अधिकांश उत्तरदाता (करीब 90%) जे.सी. बोस विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, YMCA से हैं।

लिंग:

- अधिकांश उत्तरदाता (करीब 70%) महिला हैं।

- करीब 30% उत्तरदाता पुरुष हैं।

निवास:

- अधिकांश उत्तरदाता (करीब 80%) शहरी क्षेत्रों से हैं।
- करीब 15% उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्रों से हैं।
- कुछ उत्तरदाताओं ने “अर्ध-शहरी” क्षेत्रों का उल्लेख किया।

द्वितीय भाग प्रश्नावली

- आप व्यावहारिक शिक्षा को कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?
- आपके अनुसार व्यावहारिक शिक्षा के मुख्य लाभ क्या हैं? (अधिकतम 2 चुनें)
- क्या आपकी शिक्षा में व्यावहारिक शिक्षा के तत्व शामिल हैं?
- व्यावहारिक शिक्षा ने आपकी राष्ट्रीय पहचान को कैसे प्रभावित किया है? (खुला प्रश्न)
- आपके अनुसार व्यावहारिक शिक्षा में राष्ट्रीय निर्माण के लिए कौन से पहलू महत्वपूर्ण हैं? (अधिकतम 2 चुनें)

व्यावहारिक शिक्षा का महत्व:

- अधिकांश उत्तरदाताओं (लगभग 80%) का मानना है कि व्यावहारिक शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, कुछ ने इसे “बहुत अधिक” और दूसरों ने “अधिक” के रूप में रेट किया।
- कुछ उत्तरदाताओं ने इसे “मध्यम” (medium) के रूप में रेट किया या स्पष्ट रेटिंग नहीं दी।

व्यावहारिक शिक्षा के लाभ:

- व्यावहारिक शिक्षा के शीर्ष लाभ, जिनकी पहचान उत्तरदाताओं द्वारा की गई हैं,
- 1. **कौशल विकास:** कई उत्तरदाताओं ने कहा कि व्यावहारिक शिक्षा कौशल विकसित करने में मदद करती है, जो आत्मनिर्भरता और देश के विकास में योगदान देने के लिए आवश्यक है।

2. **आत्मनिर्भरता:** कई उत्तरदाताओं ने यह बताया कि व्यावहारिक शिक्षा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्ति अधिक स्वतंत्र और आत्मविश्वासी बन सकते हैं।
3. **सामाजिक जागरूकता:** कुछ उत्तरदाताओं ने कहा कि व्यावहारिक शिक्षा सामाजिक जागरूकता को बढ़ाती है, जो सामाजिक जरूरतों को समझने और राष्ट्रीय विकास में योगदान करने के लिए महत्वपूर्ण है।

पाठ्यक्रम में व्यावहारिक शिक्षा का समावेश:

- अधिकांश उत्तरदाता (लगभग 90%) ने बताया कि व्यावहारिक शिक्षा उनके पाठ्यक्रम में शामिल है।

राष्ट्रीय पहचान पर प्रभाव:

- उत्तरदाता मानते हैं कि व्यावहारिक शिक्षा उनकी राष्ट्रीय पहचान पर सकारात्मक प्रभाव डालती है, जिनमें से कई ने यह उल्लेख किया है:

1. **राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करना:** व्यावहारिक शिक्षा व्यक्तियों को उनके देश की संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं को समझने में मदद करती है, जिससे राष्ट्रीय पहचान की भावना मजबूत होती है।
2. **जिम्मेदारी को बढ़ावा देना:** उत्तरदाताओं ने बताया कि व्यावहारिक शिक्षा जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्तियों को अपने देश के विकास में योगदान देने में सक्षम बनाती है।
3. **देशभक्ति को बढ़ावा देना:** कुछ उत्तरदाताओं ने यह भी बताया कि व्यावहारिक शिक्षा देशभक्ति और राष्ट्रीय गर्व की भावना को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय निर्माण के लिए महत्वपूर्ण पहलू:

- उत्तरदाताओं ने व्यावहारिक शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय निर्माण के लिए निम्नलिखित पहलुओं को महत्वपूर्ण माना:

1. **नैतिक शिक्षा:** कई उत्तरदाताओं ने व्यावहारिक शिक्षा में नैतिक शिक्षा के महत्व पर जोर दिया, यह बताते हुए कि यह व्यक्तियों के मूल्यों और सिद्धांतों को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
2. **सांस्कृतिक मूल्य:** कई उत्तरदाताओं ने बताया कि सांस्कृतिक मूल्य व्यावहारिक शिक्षा में आवश्यक हैं, जो व्यक्तियों को उनके देश की विरासत को समझने और सराहने में सक्षम बनाते हैं।
3. **सामुदायिक सेवा:** कुछ उत्तरदाताओं ने व्यावहारिक शिक्षा में सामुदायिक सेवा के महत्व पर जोर दिया, जो व्यक्तियों को सामाजिक जिम्मेदारी का भाव विकसित करने में मदद करती है।

तृतीय भाग प्रश्नावली:

- आप सोशल मीडिया का कितना उपयोग करते हैं?
- आपके द्वारा सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कौन से हैं? (अधिकतम 2 चुनें)
- सोशल मीडिया पर आपको राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा कितनी प्रभावी लगती है?
- सोशल मीडिया पर कौन से नैरेटिव आपको राष्ट्रीय निर्माण के लिए प्रेरक लगते हैं? (खुला प्रश्न)

सोशल मीडिया का उपयोग:

- अधिकांश उत्तरदाता (लगभग 80%) रोजाना सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं, व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम सबसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म हैं।
- कुछ उत्तरदाता कभी-कभी या सप्ताह में कुछ दिनों में सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं।

राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा में सोशल मीडिया की प्रभावशीलता:

- उत्तरदाताओं की राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा में सोशल मीडिया की प्रभावशीलता के बारे में मिलीजुली राय है, कुछ ने इसे “मध्यम” या “कम” के रूप में रेट किया।
- कुछ उत्तरदाताओं ने यह उल्लेख किया कि सोशल मीडिया राष्ट्रीय मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने और चर्चा को बढ़ावा देने में प्रभावी हो सकता है।

राष्ट्रीय निर्माण को प्रेरित करने वाली नैरेटिव:

- उत्तरदाताओं ने राष्ट्रीय निर्माण को प्रेरित करने वाली विभिन्न नैरेटिव का उल्लेख किया, जिनमें शामिल हैं:
- 1. **देशभक्ति:** कई उत्तरदाताओं ने उन देशभक्ति के नैरेटिव के महत्व को उजागर किया जो राष्ट्रीय गर्व और एकता को बढ़ावा देती हैं।
- 2. **एकता और विविधता:** कई उत्तरदाताओं ने कहा कि एकता और विविधता को बढ़ावा देने वाले नैरेटिव राष्ट्रीय निर्माण के लिए आवश्यक हैं।
- 3. **शिक्षा और ज्ञान विकास:** कुछ उत्तरदाताओं ने उन वृत्तांतों के महत्व पर जोर दिया जो शिक्षा और ज्ञान विकास को बढ़ावा देते हैं।
- 4. **सामाजिक सेवा:** उत्तरदाताओं ने बताया कि सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास को बढ़ावा देने वाले वृत्तांत राष्ट्रीय निर्माण के लिए प्रेरणादायक हैं।
- 5. **सांस्कृतिक धरोहर:** कुछ उत्तरदाताओं ने उन वृत्तांतों के महत्व पर प्रकाश डाला जो सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा देते हैं।

चतुर्थ भाग प्रश्नावली:

आपके अनुसार युवाओं की भूमिका राष्ट्रीय निर्माण में कितनी महत्वपूर्ण है?

राष्ट्रीय निर्माण के लिए युवाओं को क्या करना चाहिए? (अधिकतम 2 चुनें)

आपके अनुसार विकसित भारत 2047 के निर्माण में सबसे बड़ी चुनौती क्या है? (खुला प्रश्न)

आप विकसित भारत के लिए क्या दृष्टिकोण देखते हैं? (खुला प्रश्न)

राष्ट्रीय निर्माण में युवाओं की भूमिका का महत्व:

- अधिकांश उत्तरदाताओं (लगभग 90%) का मानना है कि युवाओं की राष्ट्रीय निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है, शिक्षा, कौशल विकास, नवाचार और उद्यमिता के महत्व पर जोर देते हुए।
- कुछ उत्तरदाताओं ने सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक संरक्षण और राजनीतिक भागीदारी के महत्व को उजागर किया।

2047 तक एक विकसित भारत के लिए चुनौतियाँ:

- उत्तरदाताओं ने कई चुनौतियों की पहचान की, जिनमें शामिल हैं:
- 1. **असमानता और गरीबी:** कई उत्तरदाताओं ने आर्थिक और सामाजिक असमानताओं को संबोधित करने की आवश्यकता पर जोर दिया, सभी नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करते हुए।
- 2. **शिक्षा और कौशल विकास:** कुछ उत्तरदाताओं ने भविष्य के लिए युवाओं को तैयार करने के लिए शिक्षा और कौशल विकास में सुधार के महत्व को उजागर किया।
- 3. **भ्रष्टाचार और शासन:** भ्रष्टाचार और खराब शासन को राष्ट्रीय विकास के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में पहचाना गया।
- 4. **पर्यावरणीय स्थिरता:** उत्तरदाताओं ने विकास को पर्यावरणीय स्थिरता और संरक्षण के साथ संतुलित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।
- 5. **जनसंख्या वृद्धि और संसाधन प्रबंधन:** कुछ उत्तरदाताओं ने जनसंख्या वृद्धि के

प्रबंधन और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने की चुनौती का उल्लेख किया।

विकसित भारत 2047 के लिए दृष्टिकोण:

- उत्तरदाताओं ने एक विकसित भारत की कल्पना की, जिसमें:

 1. **समान अवसर:** कई उत्तरदाताओं ने सभी नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि या सामाजिक-आर्थिक स्थिति से हों।
 2. **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा:** उत्तरदाताओं ने सभी नागरिकों के लिए गुणवत्ता शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की आवश्यकता को उजागर किया।
 3. **तकनीकी उन्नति:** कुछ उत्तरदाताओं ने राष्ट्रीय विकास में तकनीकी उन्नति और नवाचार के महत्व का उल्लेख किया।
 4. **सामाजिक एकता और राष्ट्रीय पहचान:** उत्तरदाताओं ने सामाजिक एकता और मजबूत राष्ट्रीय पहचान की आवश्यकता पर जोर दिया, जो एकता और समावेशिता को बढ़ावा देती है।

संभावित अनुप्रयोग

1. **शिक्षा और युवा विकास के लिए नीति निर्माण — पाठ्यक्रम विकास:** शैक्षणिक संस्थान व्यावहारिक शिक्षा और सोशल मीडिया साक्षरता को अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं ताकि युवाओं को राष्ट्रीय विकास के लिए सशक्त बनाया जा सके।
 - **युवा कार्यक्रम:** नीति निर्माताओं को ऐसे कार्यक्रम तैयार करने चाहिए जो राष्ट्रीय पहचान, एकता, और युवाओं में नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सोशल मीडिया नैरेटिव का उपयोग करें।
2. **राष्ट्रीय विकास के लिए सोशल मीडिया रणनीतियाँ — सकारात्मक नैरेटिव:** सरकारें

और संगठन सकारात्मक सोशल मीडिया कथाएँ बना और प्रचारित कर सकते हैं जो युवाओं को राष्ट्रीय विकास में योगदान करने के लिए प्रेरित करें।

— **सोशल मीडिया अभियान:** अभियानों को महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने, और नागरिक भागीदारी के लिए प्रोत्साहन देने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है।

3. **शैक्षणिक सुधार — व्यावहारिक शिक्षा:** शैक्षणिक सुधारों का ध्यान ऐसे तत्वों को शामिल करने पर होना चाहिए जो कौशल विकसित करें, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दें, और छात्रों के बीच राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा दें।

अनुसंधान और अकादमिया — आगे की पढ़ाई: यह अनुसंधान व्यावहारिक शिक्षा और सोशल मीडिया की राष्ट्रीय विकास में भूमिका पर आगे की पढ़ाई के लिए एक आधार के रूप में कार्य कर सकता है, जिसमें विशिष्ट पहलुओं का अधिक गहराई से अन्वेषण किया जा सकता है।

4. युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम

- **कौशल विकास:** ऐसे कार्यक्रम विकसित किए जा सकते हैं जो युवाओं के बीच कौशल को बढ़ाने में मदद करें, जिससे वे राष्ट्रीय विकास में प्रभावी रूप से योगदान कर सकें।
- **सामुदायिक सेवा:** पहलों के माध्यम से युवाओं को सामुदायिक सेवा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जो जिम्मेदारी और राष्ट्रीय गर्व की भावना को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन व्यावहारिक शिक्षा और सामाजिक मीडिया की नैरेटिव की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है, जो युवा दृष्टिकोण और राष्ट्रीय विकास में योगदान को आकार देते हैं। इस शोध के निष्कर्ष यह

सुझाव देते हैं कि व्यावहारिक शिक्षा को सामाजिक मीडिया साक्षरता के साथ मिलाने से युवाओं को राष्ट्रीय विकास में सक्रिय भागीदार बनने के लिए सशक्त किया जा सकता है, जिससे राष्ट्रीय पहचान, एकता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा मिलता है। यह अध्ययन उन प्रमुख चुनौतियों और अवसरों की पहचान भी करता है जिनका सामना युवा राष्ट्रीय विकास में योगदान करते समय करते हैं, जिसमें गुणवत्ता शिक्षा, कौशल विकास और सकारात्मक सामाजिक मीडिया की कहानियों की आवश्यकता शामिल है।

भविष्य के शोध दिशा-निर्देश

1. **दीर्घकालिक अध्ययन:** एक दीर्घकालिक अध्ययन किया जाना चाहिए ताकि यह पता लगाया जा सके कि व्यावहारिक शिक्षा और सोशल मीडिया के नैरेटिव युवाओं के राष्ट्रीय विकास में योगदान पर समय के साथ क्या प्रभाव डालते हैं।
2. **तुलनात्मक विश्लेषण:** विश्लेषण किया जाना चाहिए कि विभिन्न सामाजिक मीडिया प्लेटफार्मों और व्यावहारिक शिक्षा के दृष्टिकोणों का युवाओं की भागीदारी और राष्ट्रीय विकास पर क्या प्रभाव है।
3. **हस्तक्षेप अध्ययन:** एक हस्तक्षेप अध्ययन तैयार किया जाना चाहिए और कार्यान्वित किया जाना चाहिए ताकि यह परीक्षण किया जा सके कि व्यावहारिक शिक्षा और सामाजिक मीडिया साक्षरता कार्यक्रम युवाओं में राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने में कितना प्रभावी है।
4. **बहुसांस्कृतिक अध्ययन:** एक बहुसांस्कृतिक अध्ययन करें ताकि यह पता लगाया जा सके कि कैसे व्यावहारिक शिक्षा और सामाजिक मीडिया की कथाएँ विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में युवाओं के राष्ट्रीय विकास में योगदान को प्रभावित करती हैं।
2. Suyitno, W. S., Muslim, U., & Chaeruman, A. (2022). Use of Social Media for Collaborative Learning in Online Learning: A Literature Review. *Al-Ishlah Jurnal Pendidikan*, 14(3), 3075-3086. (link unavailable)
3. Purnama, Y., & Asdlori, A. (2023). The Role of Social Media in Students' Social Perception and Interaction: Implications for Learning and Education. *Technology and Society Perspectives (TACIT)*, 1(2), 45-55. (link unavailable)
4. Perez, E., Manca, S., Fernández-Pascual, R., & McGuckin, C. (2023). A systematic review of social media as a teaching and learning tool in higher education: A theoretical grounding perspective. *Education and Information Technologies*, 28(9), 11921-11950. doi: 10.1007/s10639-023-11647-2
5. Ghani, N. A., & Suratin, A. C. M. (2022). How Relevant Social Media As Educational Tools: Systematic Review.
6. Jenkins, H. (2009). *Confronting the challenges of participatory culture: Media education for the 21st century*. MIT Press.
7. Freire, P. (1970). *Pedagogy of the oppressed*. Herder and Herder.
8. Castells, M. (2011). *The rise of the network society: The information age: Economy, society, and culture (Vol. 1)*. Wiley-Blackwell.
9. Ito, M., Horst, H., Bittanti, M., boyd, d., Herr-Stephenson, B., Lange, P. G., & Robinson, L. (2008). *Living and learning with new media: Summary of findings from the Digital Youth Project*. MIT Press.
10. Selwyn, N. (2011). *Education and technology: Key issues and debates*. Continuum International Publishing Group.

संदर्भ

1. Bandura, A. (1997). Self-efficacy: The exercise of control. W.H. Freeman and National Development